उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक:1726/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 07–03–2025

दिनांक	:	07 मार्च, 2025
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की छब्बीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की छब्बीसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 07 मार्च, 2025 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक, गेहू प्रजनक एवं पादप रोग वैज्ञानिक; आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के धान प्रजनक आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; उद्यान विभाग के प्रतिनिधि तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र), लखनऊ के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (07–13 मार्च, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान तापमान में क्रमिक वृद्धि होने की संभावना के दृष्टिगत प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से लगभग 2 डिग्री सेल्सियस अधिक तथा भाभर तराई क्षेत्र में सामान्य के आसपास जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 28 से 30 डिग्री सेल्सियस; दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा मध्य मैदानी क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 30 से 32 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 12 से 14 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (14 मार्च 2025-20 मार्च 2025)

इस सप्ताह के आरंभिक चरण में एवं संलग्न पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में कही-कहीं हल्की वर्षा होने जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों मे मौसम मुख्यतया शुष्क रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास तथा मध्य पश्चिमी मैदानी, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से लगभग 2 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 27 से 30 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 30 से 32 डिग्री सेल्सियस बुंदेलखंड, पूर्वी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 32 से 34 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं संलग्न पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी-उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से (2-3 डिग्री सेल्सियस) अधिक तथा भाभर तराई, पश्चिमी मैदानी, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में यह सामान्य के आस-पास जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 12 से 14 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग, बुंदेलखंड एवं विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग औसत साप्ताहिक न्यूनतम तापमान 14 से 16 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 16 से 18 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 28 फरवरी, 2025 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल जायद की बुवाई का लक्ष्य 14.28 लाख हे. के सापेक्ष कुल जायद फसलों की बुवाई 1.57 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 10.9 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 4.31 लाख हे. के सापेक्ष 0.70 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 16.19 प्रतिशत है। बाजरा के आच्छादन लक्ष्य 1.15 लाख हे. के सापेक्ष 0.0005 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 0.48 प्रतिशत है। मूंग के आच्छादन लक्ष्य 2.0 लाख के सापेक्ष 0.02 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 1.31 प्रतिशत है। उर्द के लक्ष्य 0.9 लाख हे. के सापेक्ष 0.05 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 6.19 प्रतिशत है। सूरजमुखी के लक्ष्य 0.04 लाख हे. के सापेक्ष 0. 0002 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 0.43 प्रतिशत है। चेना की बुवाई लक्ष्य 0.01 लाख हे. के सापेक्ष 0.001 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 11 प्रतिशत है। जायद सब्जियों के 2.19 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.06 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 25.53 प्रतिशत है। मूंगफली के 2.09 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.035 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 1.69 प्रतिशत है। हरा चारा के 1.24 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.2 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 14.89 प्रतिशत है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- तापमान सामान्य से अधिक होने के पूर्वानुमान के दृष्टिगत खेतों में पर्याप्त नमी बनाये रखें।
- आगामी पखवारे में तापमान बढ़ने की स्थिति में गेहूँ में 0.5-1 प्रतिशत पोटैशियम नाईट्रेट का पर्णीय छिड़काव करें।
- जो खेत खाली हैं उन खेतों की मृदा की जांच करा लें तथा मृदा की जांच के आधार पर ही संस्तुत उर्वरकों का प्रयोग करें।
- सरसों की कटाई के बाद 8 प्रतिशत नमी होने पर ही भण्डारण करें।
- जायद मक्के की खेती के लिये अनुकूल है अतः इस मौसम में मक्के की खेती पर विशेष ध्यान दें।
- लालसड़न रोग से संक्रमित गन्ने की किस्म को. 0238 की बुवाई न करें।
- अधिक आय व मृदा उर्वरता बढ़ाने हेतु बसंतकालीन गन्ने के साथ अंतःफसल के रूप में मूंग, उर्द, मूंगफली एवं लोबिया की बुवाई करें।
- अगेती आलू की खुदाई एवं सरसों की कटाई के बाद खाली हुये खेतों में ग्रीष्मकालीन मक्का, मूंग, उर्द, तिल, मूंगफली एवं सूरजमुखी की बुवाई हेतु खेत की तैयारी करें।
- आम की फसल में भुनगा कीट का प्रकोप दिखाई पड़ने पर इमिडाक्लोप्रिड अथवा क्यूनॉलफॉस 2 मि.ली. को प्रति ली. पानी में घोलकर बनाकर छिड़काव करें।
- आम के पाऊडरी मिल्ड्यू की रोकथाम के लिये टाईडिमार्फ अथवा पेनकोनाजोल अथवा फेनारीमॉल 1 मि.ली. प्रति ली. पानी अथवा सल्फेक्स पाऊडर 2 ग्रा. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- पंगेशियस प्रजाति की मछलियों के संचयन हेतु मौसम अनुकूल है अतः 15 ग्रा. से 20 ग्रा. की अंगुलिकाओं का संचयन 20,000 से 25,000 प्रति हे. की दर से करें।

गेहूँ की खेती

- सिंचित व असिंचित दोनों प्रकार के गेहूँ में अनावृत्त कंडुवा व गेरूई रोग का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोल 25 प्रतिशत ई.सी. की 500 मि.ली. प्रति हे. लगभग 750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- बीज का उत्पादन कर रहे किसान, गेहूँ की बोई गई प्रजाति की शुद्धता बनाये रखने के लिये रोगिंग (अवांछित पौधों को निकाल दें) करें।

दलहनी फसलों की खेती

- दलहनी फसलों में सेमीलूपर कीट के नियंत्रण हेतु फिप्रोनिल 5 एस.सी. 500 मि.ली. का 600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर छिड़काव करें।
- चने के खेत में यदि कटुआ कीट दिखाई दे रहे हों तो स्थान-स्थान पर बर्ड पर्चर लगायें तथा थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कई स्थानों पर घास-फूस रखें। प्रातःकाल फूस पर छिपे हुए कटुआ कीटों को इकट्ठा कर समाप्त करें।
- मटर/मसूर में फली छेदक/फली बेधक कीट के प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फूल एवं फलियां बनते समय 5 फरोमोन ट्रैप और 2 प्रकार प्रपंच प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में लगायें तथा नीम के बीज आर्क (5 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करें या इमामैक्टिन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एस.जी. का 5 ग्रा. 16 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत का 200 मि.ली. को 600 ली. पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें।

जायद फसलों की खेती

- ग्रीष्मकालीन मूंगफली की बुवाई के लिये संस्तुत किस्मों आई.सी.जी.वी.-93468, जी.जे.जी., एच.एन.जी.-123, डी.एच.-86 तथा टी.जी.-37 ए आदि की बुवाई करें।
- जायद में मक्के की बुवाई के लिये मक्का की संकुल किस्मों नवजोत, श्वेता, आजाद उत्तम, कंचन, गौरव व संकर किस्मों दक्कन-115, एम.एम.एच.-133, प्रो-4212, हरे भुट्टे माधुरी, प्रिया शिशु मक्का हेतु बी.एल.-42, प्रकाश, पूसा अगेती संकर मक्का-2 की बुवाई करें।
- उर्द की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यथा प्रताप उर्द-1, वल्लभ उर्द-1, आई.पी.यू. 11-2, पंत उर्द-10, आई.पी.यू. 13-1, टाइप-9, नरेन्द्र उर्द-1, आजाद उर्द-1, उत्तरा, आजाद उर्द-2, व शेखर-2 आदि की बुवाई करें।
- जायद में सूरजमुखी की संकुल किस्मों मॉडर्न, सूर्या व संकर किस्मों के.वी.एस.एच.-1, एस.एच.-3322 व एम. ए.एफ.एच.-17 की बुवाई करें।
- नदी के किनारे बोये जाने वाले खरबूजा की संस्तुत प्रजातियों काशी मधु, पूसा शरबती, पूसा मधुरस, हरा मधु, पंजाब-सुनहरी तथा संकर किस्मों पंजाब संकर तथा तरबूज की संस्तुत प्रजातियों सूगर बेबी, दुर्गापुर केसर, अर्का मानिक, दुर्गापुर मीठा, संकर किस्मों आर्का ज्योति की बुवाई करें।
- जायद फसलों की बुवाई लाइन में ही करें ताकि अंतः शस्य क्रियायें आसानी से की जा सकें।

गन्ना की खेती

- नवीन उन्नत किस्मों यथा को.शा.-13235, को.लख.-14201, को.-15023, को.शा.-17231, को.शा.-18231, को.लख.-16202, को. शा.-16233, को. शा.-14233, को.-0118 तथा को.लख.-94184 आदि की बुवाई करें।
- बसंतकालीन गन्ना की बुवाई करते समय मृदा उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा 4 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से मृदा में प्रयोग करें।
- बीज गन्ने के उपचार हेतु कार्बेन्डाजिम अथवा थायोफिनेट मिथाइल 0.1 प्रतिशत का प्रयोग करें।
- बसंतकालीन बुवाई हेतु 05 टन प्रति एकड़ की दर से कार्बनिक खाद (गोबर खाद या प्रेसमड) के साथ 72 कि. ग्रा. नाइट्रोजन, 32 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 24 कि.ग्रा. पोटाश एवं 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की दर से उर्वरकों का प्रयोग करें। पेड़ी गन्ने में संस्तुत उर्वरकों की मात्रा का 25 प्रतिशत अधिक मात्रा का उपयोग करें।
- बीज गन्ना उत्पादन वाले कृषक बीज प्रजातियों का रिकार्ड रखें तथा मानकों का पालन करें जिससे शुद्ध एवं स्वस्थ बीज उत्पादन हो सकें।
- जिस खेत में गन्ने की पेड़ी रखनी है वहां जमीन की सतह से कटाई करें तथा 10 दिन के अंदर पानी लगाकर आवश्यक संस्तुत उर्वरकों का प्रयोग करें।

सब्जियों की खेती

- आलू की रबी मौसम में बोई गई फसल की खुदाई का सही समय है अतः जिन किसान भाईयों ने खुदाई नहीं की है वह अतिशीघ्र खुदाई करें तथा खुदाई के पश्चात् आलू को छाया में फैलाकर रख दें जिससे छिलका मजबूत हो जाय।
- मेंथा की रोपाई का सही समय है किसान भाई मेंथा फसल की रोपाई लाइन से लाइन या मेड़ बनाकर इसी माह में कर लें। पर्यावरण सुरक्षा के दृष्टिगत मेंथा की बुवाई केवल तराई क्षेत्रों में करें।

- जायद मौसम में भिण्डी, लोबिया एवं कद्दूवर्गीय फसलें यथा लौकी, तोरिया, खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज तथा अन्य सब्जी फसलों की बुवाई का सही समय है अतः बुवाई करें।
- प्याज एवं लहसुन की निराई गुड़ाई/बैंगनी धब्बा तथा थ्रिप्स कीट के नियंत्रण हेतु क्रमशः जिनेब 2 ग्राम/ली. तथा डाईमेथोएट 1 मि.ली./ली. का छिड़काव करें।
- जायद मौसम में कद्दूवर्गीय फसलों में 40:20:20 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से नाईट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश का बुवाई के समय प्रयोग करें।
- प्राकृतिक खेती करने वाले किसान मुख्यता जो नदी के किनारे खेती करते हैं वह जीवामृत व घन जीवामृत की संस्तुत मात्रा का प्रयोग करें।

बागवानी

- आम की फसल में भुनगा कीट की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. (0.3 मि.ली./ली. पानी) एवं प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत ई.सी. (1 मि.ली./ली.) पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- इस सप्ताह तापमान सामान्य से अधिक होने के दृष्टिगत लीची में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- नींबू में कैंकर की रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्रा.+100 ग्रा. स्ट्रेप्टोमाइसिन 600 से 700 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- नवीन रोपित बागों में सिंचाई करें।

पशुपालन

- राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अन्तर्गत प्रदेश में कार्यान्वित भेड़, बकरी, सूकर, कुक्कुट, खाद्य चारा परियोजना में रोजगार के लिये पशुपालन विभाग/पशुचिकित्सालयों से सम्पर्क करें।
- बरसीम के बीज उत्पादन के लिये मार्च के दूसरे सप्ताह के बाद चारे के लिये कटाई न करें।
- गिन्नी तथा नेपियर घास की नर्सरी डालें तथा यदि नर्सरी तैयार है एवं पानी की व्यवस्था हो तो रोपाई करें।
- ज्वार की चारा के लिये ली गई फसलों में सिंचाई अवश्य करें, बिना सिंचाई की हुई फसल को चारे के लिये उपयोग न करें।
- मक्का की अफ्रीकन टॉल तथा बाजरा की ज्यांट बाजरा की बुवाई करें।
- पशुओं में पी.पी.आर. तथा खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण अवश्य करायें। यह टीकाकरण पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क लगाया जा रहा है।
- पशुओं को अंतः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवीनाशक पशुचिकित्सक की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।
- पशुओं को केवल हरा चारा न खिलायें उनको 60:40 के अनुपात में सूखा एवं हरा चारा मिलाकर खिलायें।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं. -1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।

मत्स्य पालन

- मार्च माह के प्रथम सप्ताह में पूर्व संचित मछलियों की निकासी कर नये फसल के लिए तालाब की तैयारी करें। मछलियाँ छोटी हो तो जाल चलाकर मछलियों के स्वास्थ्य/संख्या/आकार आदि की जाँच कर लें तथा नियमित आहार देना प्रारंभ कर दे। तालाब में नियमित रूप से चूने का छिड़काव करें।

- तालाब की तैयारी में जल निकासी और तालाब को सुखाने के उपरान्त तालाब को जोत कर तालाब में पानी भरने से पूर्व सरसों खल्ली, चूना, गोबर एवं रासायनिक उर्वरक का छिड़काव मत्स्य बीज संचयन से 15 दिन पूर्व करना चाहिए।
- यदि तालाबों की जल निकासी संभव न हो तो खरपतवार निकाल कर अवांछित मछलियों को मारने के लिए महुआ की खल्ली का प्रयोग 2500 किलोग्राम/हेक्टेयर की दर एवं कीड़ों-मकोड़ों को मारने के लिए ब्यूटॉक्स, क्लिनर, टिनिक्स टिकआउट इत्यादि का प्रयोग 80-100 एम.एल.प्रति एकड़ की दर से धूप रहने पर करना चाहिए।
- तालाब में बीज संचय, खाद (कम्पोस्ट) डालने के 7-10 दिनों के बाद की जानी चाहिए। खाद डालने के बाद जब पानी का रंग भूरा हरा हो जाये तो यह पानी में प्रोंतिक भोजन की उपस्थिति का संकेत है।
- मत्स्य बीज के संचयन को गर्म समय में टाल देना चाहिए। सुबह 9 बजे के पूर्व संचय करना चाहिए।
- मत्स्य बीज संचयन 8,000-10,000 फींगरलिंग/हेक्टेयर की दर से करना चाहिए।
- मत्स्य बीज संचयन का कार्य 15 मार्च से 30 मार्च तक कर लें।
- मछलियों को मत्स्य आहार नियमित रूप से देना प्रारंभ कर दें।
- मार्च के दूसरे एवं तीसरे सप्ताह से ग्रास कार्प की ब्रिडिंग हेतु प्रजनक मछलियों को अलग तालाब में रखकर संतुलित भोजन कराना चाहिए।

रेशम पालन

- बसंत शहतूती व्यवसायिक फसल, 2025 एवं बसंत एरी व्यवसायिक फसल का चाकी कीटपालन कार्य प्रगति पर है। इस हेतु कीटपालकों/ कृषकों को सुझाव दिया जाता है कीटपालन गृह में आवश्यक तापमान एवं आद्रता बनाए रखें तथा कीटों की साफ-सफाई एवं फीडिंग समय से करें।
- समस्त कृषकों/कीटपालकों से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने कीटपालन गृह एवं उपकरण के विशुद्धीकरण का कार्य पूर्ण कर चुके होगें, जिनका कार्य अवशेष है वह यथाशीघ्र विशुद्धीकरण का कार्य पूर्ण कर ई-डिस्टिक पोर्टल पर विभागीय यू.आर.एल. *http:sericulture.eservicesup.in* पर पंजीकरण कराते हुये आवश्यक कीटाण्ड मात्रा आरक्षित करा लें। किसी भी प्रकार की असुविधा/जानकारी के लिये दिये गये नम्बर 7388305554 पर सम्पर्क करें।

वानिकी

- नये पौधे के रोपण हेतु 45x45x45 से.मी. के गड्डे यथाशीघ्र खोद लें।
- पुराने रोपे गये पौधों में निराई गुड़ाई तथा सिंचाई के साथ-साथ मल्चिंग भी कर दें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 21 मार्च, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट upcar.up.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।

- **क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।**
- **क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल upcar12@gmail.com पर**

प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

(संजय सिंह)
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।

28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक।
43. कृषि विभाग के सभी उप कृषि निदेशक।
44. समस्त जिला कृषि अधिकारी।
45. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
46. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
47. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
48. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
49. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
50. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

7-3-25

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की छब्बीसवीं बैठक दिनांक 07 मार्च, 2025 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
2. डा. संजीव, उप महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
3. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ
4. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
5. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
6. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
7. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
8. डा. सोमवीर सिंह, सह प्राध्यापक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. डा. संजय कुमार मिश्र, उपनिदेशक, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश ।
10. श्री सौरभ सक्सेना, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश
11. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ (ऑनलाइन)।
12. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
13. डा. प्रिया रंजन कुमार, सह प्राध्यापक (पशुचिकित्सा), बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (ऑनलाइन)।
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
15. डा. नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान विभाग, लखनऊ।
16. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।